द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

ध्वनियों का वर्गीकरण -

विश्व की अन्य भाषाओं की तरह हिन्दी में भी ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं- (i) स्वर और (ii) व्यंजन।

(i) स्वर - स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जिनके उच्चारण में (मुँह में ) वायु मार्ग में किसी भी प्रकार की पूर्ण या अपूर्ण रुकावट नहीं होती या जिनके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख विवर से बाहर निकलती है। उन ध्वनियों को स्वर कहते हैं। परम्परागत पुस्तकों में हिन्दी वर्णमाला में निम्नांकित स्वरों का उल्लेख मिलता है-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।

उच्चारण की दृष्टि से इनमें केवल निम्नांकित दस ही स्वर माने गए हैं -

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। ’ऋ‘ उच्चारण के स्तर पर ’रि‘ अर्थात् व्यंजन (र्) और स्वर (इ) का योग है। ’अं‘ अनुस्वार (जो विभिन्न ध्वनियों में ङ्, ञ्, ण्, न्, म् पाँच तरह से काम करता है। ) का मिला हुआ रूप है तथा ’अः‘ (अ+ह्) है। इस तरह शेष तीनों अर्थात् ऋ, अं, अः स्वर न होकर स्वर व्यंजन में मिले हुए हैं।

स्वरों का वर्गीकरण -

(1) मात्रा के आधार पर - मात्रा का तात्पर्य काल से है। मात्रा के आधार पर स्वर तीन प्रकार के होते हैं -

(क) हृस्व स्वर - जिनके उच्चारण में एक मात्रा काल का समय लगता है। जैसे - अ, इ, उ हृस्व स्वर।

(ख) दीर्घ स्वर - जिनके उच्चारण में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता हो या दो मात्रा काल का समय लगता हो। जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं।

(ग) प्लुत स्वर - जिनके उच्चारण में तीन मात्रा काल का समय लगता है। जैसे - ओऽम, हेऽऽ, आदि।

(2) जीभ के भाग के आधार पर - कुछ स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग काम करता है। कुछ में मध्य भाग तथा कुछ में पश्च भाग प्रयोग में आता है। इसी आधार पर स्वर तीन प्रकार के माने गए हैं -

(क) अग्र स्वर - इ, ई, ए, ऐ

(ख) मध्य स्वर - अ (इसे केन्द्रीय स्वर भी कहते हैं।)

(ग) पश्च स्वर - उ, ऊ, ओ, औ, आ

(3) हवा के नाक और मुँह से निकलने के आधार पर -

(क) मौखिक या निरनुनासिक - जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है, उन्हें मौखिक या निरनुनासिक स्वर कहते हैं। जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ख) अनुनासिक - जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुँह के अतिरिक्त नाक से भी निकलती है, उन्हें अनुनासिक स्वर कहते हैं। जैसे - अँ, आँ, इँर्, इं, उँ, ऊँ, एँ, एंे, आंे, औं।

 (4) ओष्ठों की स्थिति के आधार पर - इस आधार पर तीन भेद हैं -

 (क) वृत्तमुखी/वर्तुल - जब ध्वनि का उच्चारण करते समय ओष्ठ (ऊपरी तथा निचला होंठ ) थोड़ा आगे निकलकर वृत्ताकार हो जाते हैं तो वर्तुल स्थिति होती है। जैसे - उ, ऊ, ओ, औ।

 (ख) अवृत्तमुखी - इसमें ओष्ठों की स्थिति स्वाभाविक रूप से खुले होने की रहती है। अंग्रेजी में इसे फ्लैट की संज्ञा दी गई है। अ, इ, ई, ए, ऐ में होट गोल नहीं होते हैं।

 (ग) अर्द्धवर्तुल - जब ओष्ठों की स्थिति अर्द्धवृत्ताकार होती है। जैसे - आ

 (5) जीभ के उठने के आधार पर - जीभ के उठने से मुख विवर सँकरा हो जाता है, इसलिए जब जीभ बहुत ऊपर उठ जाती है तो उसे संवृत्त तथा बहुत नीचे होती है तो विवृत्त कहते हैं। बीच में अर्द्धसंवृत्त तथा अर्द्धविवृत्त स्थिति भी होती है। हिन्दी स्वरों के इस आधार पर तीन भेद हैं -

 (क) संवृत्त - इ, ई, उ, ऊ

 (ख) अर्द्धसंवृत्त - ए, ओ

 (ग) अर्द्ध विवृत्त - ऐ, ऑ, औ

 (घ) विवृत्त - आ

 (6) प्रकृति के आधार पर - स्वर प्रकृति के आधार पर मूल तथा संयुक्त दो प्रकार के होते हैं।

 (क) मूल स्वर - इसमें जीभ एक स्थान पर ही रहती है। हिन्दी में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ मूल स्वर हैं।

 (ख) संयुक्त स्वर - संयुक्त स्वर में जीह्वा एक स्वर के स्थान से दूसरे स्थान की ओर चलती है और इस चलने की स्थिति में उच्चारण हो जाता है अर्थात् ये दो स्वरों का संयुक्त रूप होते हैं। यथा - ऐ (अई) औ (अ ऊ)

 (7) स्वर तंत्रियों की स्थिति के आधार पर - इस आधार पर दो भेद हैं -

 (क) घोष ध्वनियाँ - जब स्वर तंत्रियाँ एक-दूसरे के निकट आ जाती हैं और वायु घर्षण करके निकलती है। सभी स्वर घोष होते हैं।

 (ख) अघोष ध्वनियाँ - जब स्वर तंत्रियाँ निष्क्रिय होती हैं या एक-दूसरे से इतनी दूर होती है कि वायु निर्गमन में कोई अवरोध नहीं होता।

 (8) मुँह की माँस पेशियों की स्थिति के आधार पर - उच्चारण करते समय माँस पेशियाँ कभी कठोर और कभी शिथिल होती हैं। इस आधार पर स्वरों के तीन भेद हैं -

 (क) दृढ़ - ई, ऊ

 (ख) शिथिल - अ, इ, उ

 (ग) मध्य - ए